प्राथमिक और द्वितीयक गुण - लॉक

लॉक के अनुसार ज्ञान प्रत्ययों के रूप में होता है। इन प्रत्ययों को उत्पन्न करने वाली शक्ति ही गुण कहलाती है। लॉक के अनुसार 'गुण' द्रव्य की वह शक्ति है जिसके कारण हमारे मन में प्रत्यय उत्पन्न होते हैं। हमारा प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क गुणों से ही होता है, द्रव्य से नहीं। गुण ही हमारे साक्षात ज्ञान (अनुभव) के विषय बनते हैं। हमें द्रव्य का साक्षात ज्ञान नहीं होता। ये गुण दो प्रकार के होते हैं- प्राथमिक गुण और गौण गुण।

प्राथमिक गुण वे हैं जिनका अस्तित्व हमारे ज्ञान पर निर्भर नहीं हैं, अपितु ये अनिवार्य रूप से द्रव्य में रहते हैं। इन्हें द्रव्य से पृथक नहीं किया जा सकता। ये द्रव्य के यथार्थ या वास्तविक एवं अवियोज्य गुण हैं। द्रव्य के मूल गुण हैं- विस्तार (Extension), घनत्व (Solidity), आकृति (Figure) गति (Motion), स्थिति (Rest) और संख्या (Number) आदि द्रव्य के प्राथमिक गुण है। उदाहरणार्थ आकृति किसी वस्तु का मूलगुण है। आकृति के बिना हमें वस्तु का ज्ञान नहीं हो सकता। गेंद या फुटबॉल का ज्ञान उसके गोलाकार के बिना नहीं हो सकता। हम किसी वस्तु नहीं मान सकते यदि उनमें आकृति, गति आदि न हों। अतः आकृति, गति आदि वस्तु के धर्म या मूलगुण हैं। परन्तु इन गुणों को वस्तु से अलग नहीं किया जा सकता, अतः इन्हें वस्तु का अविच्छेद्य धर्म माना गया है। लॉक के अनुसार हमारे मन में आकृति, गति आदि प्रत्ययों का ज्ञान तो हमें इन्द्रियों से होता है परन्तु इनका अस्तित्व इन्द्रिय ज्ञान से स्वतंत्र है। किसी वस्तु में आकार अवश्य होगा चाहे हम उसे देखे या न देखे। वस्तु का

Scanned with CamScanner

आकार हमारे देखने पर निर्भर नहीं है, यह तो वस्तु का अपना धर्म है। इसकी उपलब्धि या इसका ज्ञान हमें केवल इन्द्रियों से होता है। परन्तु इसकी सत्ता इन्द्रियों के अधीन नहीं है। ये वस्तु के स्वतंत्र धर्म हैं। इस प्रकार ज्ञान की दृष्टि से मूलगुण परतंत्र हैं, परन्तु सत्ता की दृष्टि से स्वतंत्र।

गौण गुण या उपगुण द्रव्य के परिवर्तनशील धर्म है। गौणगुण हमारी आत्मा में द्रव्यों के मूलगुणों द्वारा उत्पन्न की गई संवेदना मात्र है। ये वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मगत हैं। ये गौण गुण मानवों की इन्द्रियों पर निर्भर करते हैं। जैसे रूप, रस, स्पर्श, गंध आदि गौण गुण हैं। यद्यपि गौण गुण आत्मनिष्ठ हैं, परन्तु इन्हें हमारी आत्मा उत्पन्न नहीं करती, बल्कि प्राथमिक गुणों के द्वारा ये गौण गुण आत्मा में उत्पन्न किए जाते हैं। अतः उपगुण के कारण मूलगुण हैं। उदाहरणार्थ, रूप उपगुण है। रूप आकार के बिना नहीं रह सकता। अर्थात साकार ही सरूप है। प्रश्न यह है कि रूप है क्या? लॉक के अनुसार रूप संवेदना है। इसकी उत्पत्ति आकृति के अधीन है। अतः उपगुण संवेदना है जो मूलगुणों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। बर्फ के टुकड़े का रूप उजला है, यहाँ उजलापन की अभिव्यक्ति आकार के माध्यम से ही अभिव्यक्त होता है। यदि बर्फ के टुकड़े का कोई आकार न हो तो उसके रूप का ज्ञान कैसे होगा? इस प्रकार विभिन्न संवेदनाओं को उत्पन्न करने वाली शक्ति का नाम ही उपगुण है। इन्हें स्वतंत्र नहीं वरन् परतंत्र माना गया है। उपगुण अपनी उत्पत्ति और ज्ञान दोनों दृष्टि से परतंत्र हैं। इनकी उत्पत्ति मूलगुणों के कारण होती है तथा इनका ज्ञान भी ज्ञाता पर निर्भर है। रूप संवेदना है जो देखने वाले पर निर्भर करता है। यदि देखने वाला न हो तो रूप की सत्ता में सन्देह होगा। इस प्रकार लॉक महोदय का कहना है कि उपगुण वस्तु के धर्म नहीं, वरन् मूलगुणों के माध्यम से उत्पन्न संवेदना है। इन संवेदनाओं की उत्पत्ति मूलगुण के कारण होती है, परंतु इसका अनुभव ज्ञाता को

Scanned with CamScanner

होता है। रूप, रस आदि उपगुण हैं। इनकी उत्पत्ति आकृति, स्वाद आदि मूलगुणों पर निर्भर हैं। यदि वस्तु का आकार न हो तो रूप की संवेदना नहीं होगी, यदि स्वाद न हो तो रस की संवेदना नहीं होगी। अतः उपगुण मूलगुणों पर आश्रित हैं।

* मूलगुण और उपगुण में भेद : (क) मूलगुण द्रव्य के अविच्छेद धर्म या स्वभाव हैं। इन्हें द्रव्य से पृथक नहीं किया जा सकता। बर्फ के टुकड़े से उसकी आकृति अलग नहीं हो सकती। उपगुण वस्तु के धर्म नहीं, वरन् मूलगुणों के धर्म हैं। बर्फ का उजला रंग बर्फ के आकार का धर्म है। इन्हे भी द्रव्य का धर्म समझा जाता है, परन्तु इनका साक्षात् सम्बन्ध मूलगुणों से ही है।

(ख) मूलगुण द्रव्य के स्वतंत्र धर्म हैं। उपगुण ज्ञाता पर निर्भर हैं। बर्फ के टुकड़े का गोल-आकार होना मूलगुण है। यह टुकड़े में रहेगा। परन्तु उसके उजले रंग का ज्ञान तो ज्ञाता के अधीन है। यदि संवेदनकर्ता (ज्ञाता) न हो तो रूप की संवेदना नहीं होगी। अतः मूलगुण की सत्ता स्वतंत्र है, उपगुण परतंत्र है।

(ग) मूलगुण किसी वस्तु का वास्तविक धर्म है। इसके बिना वस्तु की सत्ता नहीं रह सकती। उपगुण तो संवेदना है। वस्तु में विभिन्न संवेदनाओं का स्वरूप बदलता रहता है। किसी वस्तु में विभिन्न रूपों की प्रतीति है। जो अभी उजला है वह नीला दिखलायी पड़ सकता है। परन्तु मूलगुण वास्तविक धर्म होने के कारण वस्तु के साथ ही बदलता रहता है। वस्तु की आकृति में भी परिवर्तन हो सकता है। परन्तु इसके साथ-साथ वस्तु में भी परिवर्तन हो जाएगा। परन्तु उपगुणों के परिवर्तन से वस्तु के स्वरूप पर प्रभाव नहीं पड़ता।

Scanned with CamScanner

(घ) लॉक के अनुसार मूलगुण निरपेक्ष हैं तथा उपगुण सापेक्ष। उपगुण तो संवेदनाएँ हैं। उनके लिए संवेदनकर्ता (ज्ञाता) की आवश्यकता है। मूलगुण के लिए ज्ञाता की अपेक्षा नहीं। किसी भौतिक द्रव्य में आकृति अवश्य रहेगी। इसे अनुभव करने वाला ज्ञाता हो या न हो। अतः मूलगुणों का अस्तित्व ज्ञाता के अधीन है नहीं हैं।

(ङ) उपगुणों का संबंध हमारी इन्द्रियों से है, मूलगुणों का संबन्ध हमारी बुद्धि से है।

समीक्षा : विद्वानों के अनुसार लॉक का गुण विचार स्पष्ट नहीं है। लॉक गुणों का अस्तित्व मानते हैं तथा इसी के आधार पर द्रव्य (गुणी) तथा ज्ञाता (मन) की संवेदना (उपगुण) भी बतलाते हैं। वास्तविक धर्म तो सत् हैं संवेदनाएँ मन के अधीन हैं। इन दोनों का एक साथ सम्बन्ध बैठ नहीं पाता। यदि मूलगुणों की सत्ता स्वतंत्र है तो इनका ज्ञान भी स्वतंत्र होना चाहिए। परन्तु सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि गुण की सत्ता तो द्रव्य के अधीन है यदि द्रव्य न हो तो गुण निराधार हो जायेंगे। यह मानते हुए भी लॉक गुणों को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। उनका कहना है कि गुणों के आधार ( ) की कल्पना के लिए गुणों की वास्तविक सत्ता स्वीकार करना आवश्यक है। यदि गुणों की सत्ता वास्तविक है तो इनके आधार की सत्ता काल्पनिक कैसे ? पुनः यदि गुण प्रत्यक्ष ज्ञान के विषय हैं तो इनका आधार (द्रव्य) भी प्रत्यक्षगम्य ही होना चाहिए। परन्तु लॉक इसे नहीं स्वीकार करते। उनके अनुसार द्रव्य अनुमेय है। गुणों का यथार्थ स्वरूप लॉक के दर्शन में स्पष्ट नहीं हो पाता। उनके अनुसार गुण शक्ति है तथा संवेदना भी है। शक्ति होने से ही गुण (मूलगुण) संवेदनाओं (उपगुण) को उत्पन्न करते हैं। जो शक्ति है वह संवेदना का रूप कैसे लेगी ? शक्ति वस्तु में रहेगी और संवेदना मन में। दोनों एक साथ नहीं रह सकते। इस तरह की अनेक कठिनाईयाँ लॉक के दर्शन में विद्यमान हैं।

Scanned with CamScanner